प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- महिमा योग्य बनने के लिए कौन-सा महीन पुरुषार्थ चाहिए?

उत्तरः- यह क्या करता, यह क्या करता... इस चिंतन से मन-बुद्धि मुक्त रहें क्योंकि उसमें हमारा क्या जाता है? वह क्या करता है, यह देखना बड़ी भूल है। फलाने ने यह किया, वो किया... यह बताना तुम्हारी ड्यूटी नहीं है। जो हो रहा है, अच्छा है, जो होगा, अच्छा होगा, यह अन्दर में गारंटी है। मैं तो प्रभु-लीला देख रही हूँ। कैसे बाबा ने इतनी सुन्दर रचना रची है! हरेक को खटिया, कुटिया मिलती है, खाना मिलता है, बनाने वाले बनाते हैं, खिलाने वाले खिलाते हैं। बाबा ऊपर में बैठ यहाँ वहाँ सब देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि में इतनी ताकत है, जो हमारी वृत्ति-स्मृति भी श्रेष्ठ बनती जा रही है क्योंकि बाप, टीचर, सतगुरु है। जब से शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा का रथ लिया, तब से ब्रह्माबाबा को तो यही लगन रही कि जैसे शिवबाबा ने मुझे उच्चतम बनाया है, ब्रह्मावत्स भी बनें। महिमा योग्य बनने के लिये महीन जिगरी पुरुषार्थ चाहिए। समय निकाल के एकांत में बैठ एकाग्रता से योग करो, सारा समय व्यस्त नहीं रहो। किसी भी कार्य के लिए कोई निमित्त बनता है तो उसे उसका बहुत अच्छा फल मिलता है, पहले भी, बाद में भी। इसके लिए अन्तर्मुखी हो एकाग्रता की शक्ति से खुद को और बाप को पहचानो, उसके बिगर यह नहीं होगा।

प्रश्नः- सर्वशक्तिवान की शक्ति किस रूप में हाजिर रहती है?

उत्तरः- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, इन चारों में से किसी में भी कमी न हो। मैं एक-एक मिनट या कुछ सेकेण्ड भी बीच-बीच में शान्त रहती हूँ। हमारी ऐसी पीसफुल लाइफ सदा कैसे रही है? जब सर्वशक्तिवान का बच्चा हूँ तो कार्य-व्यवहार में, सम्बन्ध में बाबा हमारा साथी है, आठों शक्तियाँ भी साथ हैं, हाज़िर हैं। अष्ट शक्तियाँ मेरे सामने हाज़िर न रहें तो किसके सामने होंगी? ऐसे ही वैल्यूज़ हैं। सर्वशक्तिवान की शक्ति वैल्यूज़ के रूप में मेरे सामने हाज़िर रहे, यह शान है। अपनी किसी नेचर (स्वभाव) के वश नहीं रहना। जैसे रात को देर से सोना फिर सुबह को समय पर न उठना, यह शोभा नहीं है। ऐसे जीवन की कीमत नहीं है। अमूल्य जीवन तो अभी बनेगा। बाबा कहते हैं, प्रत्यक्षफल यह है कि योगी की चाल-चलन सेवा करती है। सेवा में इतना व्यस्त नहीं हैं जो प्रैक्टिकल चेहरे-चलन से सेवा न करें। साक्षी हो देखें तो बाबा का हर एक बच्चा कोई न कोई सेवा करता है। मैं कुछ नहीं करती हूँ परन्तु खुश होती हूँ, सब कर रहे हैं।

प्रश्नः- शिव बाबा से प्यार का सबूत क्या है?

उत्तरः- जितना बाबा से कनेक्शन होगा उतनी करेन्ट आती है जैसे बिजली की करेन्ट एकदम पकड़ लेती है। हममें इतनी करेन्ट हो जो कोई भी नज़दीक आये, उसको भी करन्ट आ जाये। ऐसे जो शब्द हैं ना, उनकी गहराई में जाते हैं। कनेक्शन बुद्धि की

लाइन क्लीयर करता है। मेरे प्रति किसी आत्मा की असन्तुष्टि है और मैं उसकी परवाह न करूँ, तो यह भी भूल है इसलिए सब सन्तुष्ट रहें। सिर्फ सफाई, सादगी, सच्चाई की नकल करो, इसी से कशिश होगी। बाबा से प्यार माना जो बाबा ने कहा है, वही किया है। अभी भी जो बाबा कहता है, वही करना है, यह बात अच्छी तरह से दिल में याद आ रही है। मैं आत्मा शरीर में हूँ, कैसी हूँ, कैसे यहाँ पहुँची हूँ, सम्भव नहीं लगता था, सम्भव हो गया, कुछ सोचे बिगर। बार-बार गुलजार दादी के शब्द याद आते हैं, जो बाबा ने कहा है वही किया है। कैसे करूँ? या यह क्या करते हैं? यह कभी ख्याल नहीं आया है, तभी सेफ हूँ, साफ हूँ।

प्रश्नः- कोई नाराज न हो, इसके लिए क्या करना है?

उत्तरः- सारा दिन प्रभु को क्या पसंद आता है? वो समझो, वो करो, तो स्वत: आपको और दूसरों को अच्छा लगेगा। न अच्छा लगता है तो भी बिचारों का दोष नहीं है। कोई भी कारण से, कोई किसी से नाराज़ न हो जाये, उसके लिये शुभ भावना रखनी है। किसी भी तरीके से मुझे प्रभु पसंद बनना है। मेरी अपनी पसंद कुछ नहीं है। जो प्रभु को अच्छा लगता है वो सबको अच्छा लगेगा। उसमें भी कोई सतोगुणी होगा तो पूरा अच्छा लगेगा, रजोगुणी होगा तो थोड़ा लगेगा, तमोगुणी होगा तो नहीं लगेगा। इसमें मैं क्या करूँ? बाबा क्या करता है? ऐसे ही बैठा है जैसे पहले से बैठा है, समझते हुए भी ज़रा भी बाबा के चेहरे पर फर्क नहीं पड़ता है। तो करनकरावनहार बाबा का पार्ट वन्डरफुल है।

प्रश्नः- दुआएँ लेने के लिए क्या करें?

उत्तरः- मनुष्य को दो रोटी ही तो चाहिएँ, सादा कपड़ा पहनना और शिवबाबा के गुण गाना। सिर्फ गुण नहीं गाना पर ऐसा गुणवान, गायन योग्य बनना है। बाबा कहते हैं, मेरे बच्चे औरों की कमज़ोरी देखने में होशियार हैं, पर अपनी कमज़ोरी देखने में कमज़ोर हैं। चलो, जो बीता सो ड्रामा। सीख रहे हैं, सम्पूर्णता को पाने के लिए। अब से आगे शुभ चिंतन में रहना है, यह हमारे लिये दवाई है। अपने लिये अच्छी-अच्छी बातें चिंतन में ले लो, बाकी कोई चिंता नहीं करो। सबके लिये शुभचिंतक बनो। ईश्वरीय स्नेह का सहयोग दो तो दुआयें मिलती हैं। हमारा जीवन ऐसा हो जो औरों को भी अपना जीवन बनाना सहज लगे। त्याग और तपस्या के साथ कोई भी कार्य, कितना भी करो पर खुशी से करो, बोझा नहीं है। भगवान के घर का खाते हैं तो सेवा तो करनी ही है पर सी फादर, फॉलो फादर। धीरज सिखाए बिना मन शान्त नहीं होता, चूँ-चूँ करता ही रहेगा इसलिए मन को पहले सुधारना है। प्रेम से सबके साथ व्यवहार करना है।

प्रश्नः- अलबेलेपन का कारण क्या है?

उत्तरः- घर जाने का समय है इसलिए अब कोई अलबेला न रहे। अलबेलापन छोड़ें, इसके लिए बाबा को कहती हूँ, कुछ करो ना बाबा। अलबेलेपन का भी कारण है ईर्ष्या, स्वमान की कमी, एक्यूरेट पुरुषार्थ करने की भावना नहीं है। तो यह ख्याल रहता है कि अभी नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। समय थोड़ा है, पुरुषार्थ में नियमित रहना, यज्ञ मर्यादाओं अनुसार चलना तथा ईश्वरीय स्नेह से सहयोगी रहना भाग्य है। कारोबार में आते भारी न होना, यह भी भाग्य है। कोई बात है तो उसे बता के यानि स्पष्ट करके हलके हो जाओ और कभी किसी के लिए भी ना उम्मीद न बनो। यह तो कभी नहीं सुधरेगा, यह ख्याल भी न आए, यह पाप है। संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ, हिम्मत वाला, उमंग वाला हो। हर एक का पार्ट अपना है। संगमयुग में, परिवर्तन होने के इस समय में चाहे तो कोई क्या से क्या बन सकता है, सबकुछ सम्भव है। मैं ज्ञान सूर्य का बच्चा 24 ही घण्टा चमकता हुआ सितारा हूँ। ऐसा सितारा ग्रहचारी उतारने वाला होता है, यदि नहीं चमकता है तो कुछ ग्रहचारी है। जैसे चन्द्रमा की चढ़ती कला, उतरती कला होती है, हर एक पूछे, मैं कौन?